आइंस्टाइन के दिमाग में ताक-झांक

पता नहीं क्यों लोगों को लगता है कि आइंस्टाइन की विलक्षण वैज्ञानिक प्रतिभा का राज़ उनके दिमाग की भौतिक संरचना में होना चाहिए। यह इस आम विश्वास की ही अभिव्यक्ति है कि 'प्रतिभा' जन्मजात होती है और आपको दिमागी संरचना के रूप में मिलती है। अब आइंस्टाइन के दिमाग की कहानी में एक नया आयाम जुड़ा है।

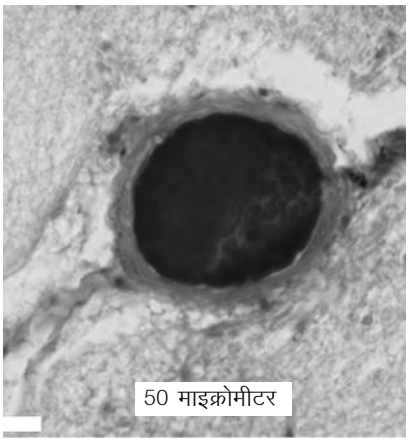

बहुत से लोग चाहते रहे हैं कि आइंस्टाइन की खोपड़ी में बुद्धिमत्ता के सुराग ढूंढ पाएं। हालांकि 1955 में उनकी मृत्यु के बाद आइंस्टाइन का भेजा शिकैगो के नेशनल म्यूज़ियम ऑफ हेल्थ एंड मेडिसिन में संरक्षित करके रखा गया था मगर इस तक पहुंच आसान नहीं है। म्यूज़ियम का मानना है कि बहुत ज़्यादा लोगों को पहुंच प्रदान की तो कहीं भेजा फ्राइ न हो जाए। वास्तव में आइंस्टाइन के भेजे को 350 पतली-पतली स्लाइस में काटकर स्लाइड्स के रूप में रखा गया है। इन स्लाइड्स को बार-बार उठाने-धरने में गड़बड़ी की आशंका के कारण ही इन स्लाइड्स तक पहुंच को सीमित रखा गया है।

1999 में किए गए एक अध्ययन से पता चला था कि आइंस्टाइन के भेजे का पेराइटल लोब सामान्य से करीब 15 प्रतिशत बड़ा है। पेराइटल लोब मस्तिष्क का वह हिस्सा होता है जो गणित व स्थान सम्बंधी तर्क से सम्बंधित होता है।

अब पहुंच की इस समस्या का एक डिजिटल समाधान निकाला गया है। आइंस्टाइन की खोपड़ी की प्रत्येक स्लाइड की डिजिटल छवि उपलब्ध कराई गई है। इनका काफी बारीकी से अध्ययन किया जा सकता है और इन्हें कोई नुकसान भी नहीं पहुंचेगा। स्लाइड्स तो सुरक्षित बनी ही रहेंगी। और अत्यंत आवश्यक होने पर स्लाइड के अवलोकन व विश्लेषण की अनुमति भी दी जा सकती है। इस तरह से आम लोग भी आइंस्टाइन के मस्तिष्क में ताक-झांक का अवसर पा सकेंगे। यहां दिया गया चित्र आइंस्टाइन के मस्तिष्क के स्तंभ वाले हिस्से की एक स्लाइस का है। ***(स्रोत फीचर्स)***